तिब्बती मंत्री त्सेपोन शाकाब्पा का ऐतिहासिक पासपोर्ट मिला

स्वतंत्र तिब्बत सरकार द्वारा जारी पासपोर्ट ने इतिहास के बारे में चीनी दावों के बखिए उधेड़े

स्वतंत्र तिब्बत सरकार के एक वरिष्ठ मंत्री शाकाब्पा वांगचुक देधेन का यह पासपोर्ट उन्हें स्वतंत्र तिब्बत सरकार ने जारी किया था। इस पासपोर्ट पर उन्होंने 1948 में सात देशों की यात्रा की थी। यह पासपोर्ट आज से 12 साल पहले उनके कई महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों और निजी सामान के साथ कालिंपोंग से चोरी हो गया था।

मुंबई में सक्रिय तिब्बत समर्थक भारतीय संगठन फ्रेंड्स आफ तिब्बत ने घोषणा की है कि स्वतंत्र तिब्बत सरकार के एक वरिष्ठ मंत्री शाकाब्पा वांगचुक देधेन का वह ऐतिहासिक पासपोर्ट मिल गया है जो उन्हें स्वतंत्र तिब्बत सरकार ने जारी किया था। इस पासपोर्ट पर उन्होंने 1948 में सात देशों की यात्रा की थी।

फ्रेंड्स आफ तिब्बत के एक वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री तेनज़िन त्सुंदू द्वारा जारी किए गए एक बयान में बताया गया है कि उन्हें धर्मशाला में साराह के तिब्बती संस्थान के एक पूर्व अध्यक्ष गेशे पेमा दोरजी से पता चला कि नेपाल जोरपाटन के एक एंटीक डीलर के पास यह पासपोर्ट है और वह इसे बेचना चाहता है। तिब्बती मंत्री का यह पासपोर्ट आज से 12 साल पहले उनके कई महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों और निजी सामान के साथ कालिंपोंग से चोरी हो गया था। बाद में किसी एंटीक डीलर के हाथों लगने के बाद यह पासपोर्ट नेपाल के इस डीलर के पास पहुंचा था।

इस बारे में खबर मिलने पर नेपाल में बौध जोरपाटन तिब्बती बस्ती के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री कांग्पो धोंदुप और श्री त्सुंदू ने नेपाली डीलर से संपर्क साधा और उसे यह पासपोर्ट तिब्बती सरकार को देने के लिए समझाया। श्री त्सुंदू के अनुसार डीलर को यह बात समझ में आ गई और अंततः वह काफी रिआयती दामों पर यह पासपोर्ट इस शर्त के साथ उन्हें सौंपने पर राज़ी हो गया कि इसे परमपावन दलाई लामा जी तक पहुंचा दिया जाएगा। बाद में 29 मार्च के दिन यह पासपोर्ट दलाई लामा जी के सचिव श्री तेनज़िन गेशे के माध्यम से उन तक पहुंचा दिया गया। तिब्बत सरकार के हाथ इस महत्वपूर्ण दस्तावेज़ के आ जाने से अब चीन सरकार के इस दावे की हवा निकल गई है कि 1950 से पहले भी तिब्बत पर चीन का नियंत्रण था।

पासपोर्ट के मिलने पर स्वर्गीय शाकाब्पा के परिवार ने प्रसन्नता व्यक्त की है। अपने एक बयान में परिवार ने कहा है कि शाकाब्पा परिवार को इस बात की खुशी है कि हमारे स्वर्गीय पिता और दादा त्सेपोन वांगचुक देधेन शाकाब्पा का मूल तिब्बती पासपोर्ट मिल गया है और अब परमपावन दलाई लामा के निजी आफिस में

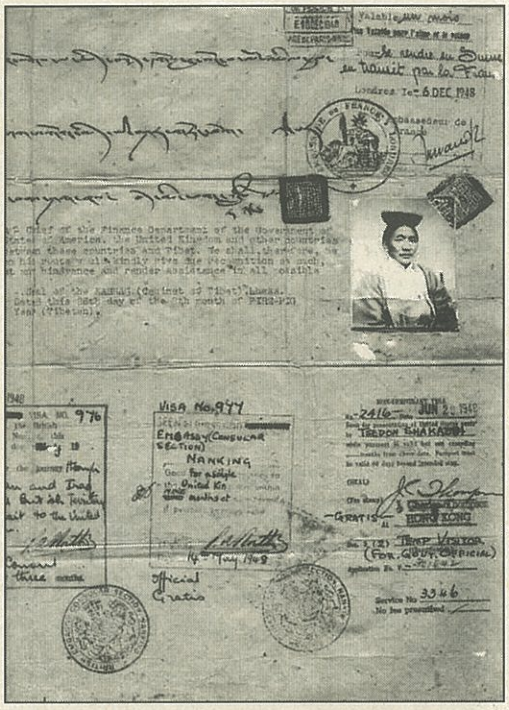

स्वतंत्र तिब्बत सरकार के मंत्री शाकाब्पा वांग्चुक देधेन का पासपोर्ट : इतिहास की गवाही

सुरक्षित रखा हुआ है। परिवार ने कहा है कि हम फ्रेंड्स आफ तिब्बत (भारत), तेनजिन त्सुंदु और उन सभी दूसरे लोगों के आभारी हैं जिन्होंने इस महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज को खोजने में मदद की। यह दस्तावेज तिब्बत की स्वतंत्रता का सबूत है। त्सेपोन डब्ल्यू.डी. शाकाब्पा की पुस्तक, तिब्बतः ए पॉलिटिकल हिस्ट्री में इसे प्रकाशित किया गया था। इस पुस्तक को पहले येल युनिवर्सिटी ने 1967 में और फिर पोताला पब्लिकेशन ने 1984 में छापा था।

23 फरवरी, 1989 को त्सेपोन डब्ल्यू. डी. शाकाब्पा की मृत्यु के बाद कालिम्पोंग (भारत) स्थित शाकाब्पा हाउस से उनके पासपोर्ट के साथ–साथ कई महत्वपूर्ण निजी वस्तुएं, दस्तावेज और दुर्लभ धार्मिक ग्रंथ भी चोरी चले गए थे। इन वस्तुओं को परिवार के सदस्यों की जानकारी या सहमति के बिना गलत तरीके से प्राइवेट डीलरों और दूसरे लोगों को बेच दिया गया। परिवार ने जनता से अपनी अपील में कहा है कि यदि किसीको इनमें से किसी भी वस्तु की जानकारी हो, तो कृपया त्सेपोन शाकाब्पा के पोते वांगचुक डी.शाकाब्पा द्वितीय को सूचित करें। आप की जानकारी को गुप्त रखा जाएगा। हम एक बार उन सभी लोगों को ध न्यवाद देते हैं जिन्होंने ऐतिहासिक दस्तावेज पासपोर्ट की बरामदगी में मदद की।

इस दस्तावेज़ के मिलने से तिब्बत की आजादी के समर्थकों में भारी उत्साह है।